साझेदारी लेखांकन के आधारभूत अवधारणाएँ

इस अध्याय के सभी महत्वपूर्ण प्रश्न – उत्तर सहित। पहले खुद हल करने की कोशिश करो, फिर उत्तर मिलाओ।

अभ्यास प्रश्न-उत्तर (हर टॉपिक से)

» साझेदारी की प्रकृति और आवश्यक विशेषताएँ

प्रश्न 1 (आसान). क्या एक ही व्यक्ति साझेदारी बना सकता है?
उत्तर – नहीं, साझेदारी के लिए कम से कम दो व्यक्तियों की आवश्यकता होती है।

प्रश्न 2 (आसान). अगर दो दोस्त मिलकर एक घर खरीदते हैं, लेकिन उसे बेचने या किराए पर देने का कोई इरादा नहीं है, तो क्या वे साझेदार हैं?
उत्तर – नहीं, वे साझेदार नहीं हैं। सिर्फ संपत्ति के सह-स्वामित्व से साझेदारी नहीं बनती, व्यवसाय होना ज़रूरी है।

प्रश्न 3 (मध्यम). क्या साझेदारी का समझौता हमेशा लिखित होना ज़रूरी है?
उत्तर – नहीं, मौखिक समझौता भी वैध होता है, लेकिन विवादों से बचने के लिए लिखित समझौता बेहतर रहता है।

प्रश्न 4 (कठिन). अगर किसी साझेदारी में लाभ तो बाँटा जाता है, लेकिन हानि नहीं बाँटी जाती, तो क्या वह वैध साझेदारी है?
उत्तर – साझेदारी में लाभ-हानि दोनों का विभाजन होना ज़रूरी है। सिर्फ लाभ बाँटना पर्याप्त नहीं है।

» साझेदारी विलेख और इसकी विषय-वस्तु

प्रश्न 5 (आसान). साझेदारी विलेख क्या होता है?
उत्तर – साझेदारों के बीच उनके व्यवसाय की शर्तों को तय करने वाला लिखित समझौता।

प्रश्न 6 (आसान). अगर साझेदारी विलेख न बनाया जाए तो क्या होगा?
उत्तर – भारतीय साझेदारी अधिनियम 1932 के प्रावधान लागू होंगे।

प्रश्न 7 (मध्यम). साझेदारी विलेख में किन दो महत्वपूर्ण बातों का उल्लेख होना चाहिए?
उत्तर – फर्म का नाम और साझेदारों के पते, तथा लाभ-हानि विभाजन अनुपात।

प्रश्न 8 (कठिन). एक साझेदार ने फर्म को 50,000 रुपये का ऋण दिया है। साझेदारी विलेख में ऋण पर ब्याज का कोई उल्लेख नहीं है। उसे कितना ब्याज मिलेगा?
उत्तर – उसे भारतीय साझेदारी अधिनियम 1932 के अनुसार 6% प्रतिवर्ष की दर से ब्याज मिलेगा।

» भारतीय साझेदारी अधिनियम 1932 के प्रासंगिक प्रावधान (विलेख की अनुपस्थिति में)

प्रश्न 9 (आसान). अगर साझेदारी विलेख में लाभ-हानि विभाजन का अनुपात नहीं लिखा है, तो लाभ कैसे बांटा जाएगा?
उत्तर – लाभ बराबर-बराबर बांटा जाएगा।

प्रश्न 10 (आसान). क्या साझेदारों को उनकी पूँजी पर ब्याज मिलेगा अगर विलेख में कुछ नहीं लिखा है?
उत्तर – नहीं, पूँजी पर कोई ब्याज नहीं मिलेगा।

प्रश्न 11 (मध्यम). सुरेश और रमेश साझेदार हैं। सुरेश ने फर्म को ₹1,00,000 का लोन दिया है। विलेख में ब्याज दर का उल्लेख नहीं है। सुरेश कितना ब्याज पाने का हकदार है?
उत्तर – सुरेश को ₹1,00,000 पर 6% प्रति वर्ष के हिसाब से ब्याज मिलेगा।

प्रश्न 12 (कठिन). पूजा और कोमल साझेदार हैं। पूजा ने वर्ष के दौरान ₹10,000 का आहरण किया है। विलेख में आहरण पर ब्याज के बारे में कोई प्रावधान नहीं है। क्या उसे आहरण पर ब्याज देना होगा?
उत्तर – नहीं, अगर विलेख में प्रावधान नहीं है, तो आहरण पर कोई ब्याज नहीं लिया जाएगा।

» साझेदारों के पूँजी खातों का रखरखाव: स्थिर पूँजी विधि

प्रश्न 13 (आसान). स्थिर पूँजी विधि में साझेदार के वेतन को किस खाते में दिखाया जाता है?
उत्तर – चालू खाते में

प्रश्न 14 (आसान). अगर साझेदार ने अतिरिक्त पूँजी लगाई है, तो वह किस खाते में जाएगी?
उत्तर – पूँजी खाते में

प्रश्न 15 (मध्यम). रवि और किशन साझेदार हैं। रवि की पूँजी ₹3,00,000 है और उसने वर्ष के दौरान ₹20,000 आहरण किए। पूँजी पर ब्याज ₹15,000 और लाभ का हिस्सा ₹25,000 है। स्थिर पूँजी विधि में रवि के पूँजी और चालू खाते में क्या शेष होगा?
उत्तर – रवि का पूँजी खाता: ₹3,00,000 (स्थिर), रवि का चालू खाता शेष: ₹20,000 (जमा) [15,000 (ब्याज) + 25,000 (लाभ) - 20,000 (आहरण)]

प्रश्न 16 (कठिन). मीना और टीना साझेदार हैं। मीना की प्रारंभिक पूँजी ₹4,00,000 है। उसने ₹50,000 की अतिरिक्त पूँजी लगाई और ₹30,000 का स्थायी आहरण किया। टीना की प्रारंभिक पूँजी ₹3,00,000 है। टीना को ₹10,000 वेतन मिला। दोनों को पूँजी पर 6% ब्याज मिलता है और लाभ का हिस्सा 1:1 है (कुल लाभ ₹80,000)। स्थिर पूँजी विधि में दोनों के अंतिम पूँजी और चालू खाते के शेष निकालिए।
उत्तर – मीना का पूँजी खाता: ₹4,00,000 + ₹50,000 - ₹30,000 = ₹4,20,000। टीना का पूँजी खाता: ₹3,00,000 (स्थिर)।
मीना का चालू खाता शेष: पूँजी पर ब्याज (4,00,000 का 6%) ₹24,000 + लाभ का हिस्सा ₹40,000 = ₹64,000 (जमा शेष)।
टीना का चालू खाता शेष: वेतन ₹10,000 + पूँजी पर ब्याज (3,00,000 का 6%) ₹18,000 + लाभ का हिस्सा ₹40,000 = ₹68,000 (जमा शेष)।

» साझेदारों के पूँजी खातों का रखरखाव: अस्थिर पूँजी विधि

प्रश्न 17 (आसान). अस्थिर पूँजी विधि में कितने खाते बनते हैं?
उत्तर – केवल एक पूँजी खाता।

प्रश्न 18 (आसान). अस्थिर पूँजी विधि में साझेदार का वेतन किस खाते में लिखा जाता है?
उत्तर – सीधे पूँजी खाते में।

प्रश्न 19 (मध्यम). अगर किसी साझेदार ने अतिरिक्त पूँजी लगाई है, तो अस्थिर पूँजी खाते पर इसका क्या प्रभाव पड़ेगा?
उत्तर – पूँजी खाता क्रेडिट होगा और उसका शेष बढ़ जाएगा।

प्रश्न 20 (कठिन). बताओ, अस्थिर पूँजी विधि में पूँजी का शेष क्यों बदलता रहता है?
उत्तर – क्योंकि सभी समायोजन जैसे वेतन, ब्याज, आहरण, लाभ-हानि का हिस्सा सीधे पूँजी खाते में ही लिखे जाते हैं, जिससे खाते का बैलेंस लगातार घटता-बढ़ता रहता है।

» स्थिर और अस्थिर पूँजी खातों के बीच अंतर

प्रश्न 21 (आसान). स्थिर पूँजी विधि में साझेदारों के कितने खाते बनाए जाते हैं?
उत्तर – दो (पूँजी खाता और चालू खाता)

प्रश्न 22 (आसान). अस्थिर पूँजी विधि में पूँजी खाते का शेष वर्ष के अंत में कैसा रहता है?
उत्तर – बदलता रहता है (अपरिवर्तित नहीं रहता)

प्रश्न 23 (मध्यम). साझेदार के वेतन को स्थिर पूँजी विधि में किस खाते में दर्शाया जाता है?
उत्तर – चालू खाते में

प्रश्न 24 (कठिन). अगर किसी साझेदार का पूँजी खाता नाम शेष (debit balance) दिखा रहा है, तो यह किस पूँजी विधि की विशेषता है?
उत्तर – अस्थिर पूँजी विधि

» लाभ एवं हानि विनियोजन खाता

प्रश्न 25 (आसान). लाभ एवं हानि विनियोजन खाते के क्रेडिट पक्ष में कौन सी मदें आती हैं?
उत्तर – शुद्ध लाभ और आहरण पर ब्याज।

प्रश्न 26 (आसान). फर्म को साझेदार को वेतन देने के लिए विनियोजन खाते में कहाँ दिखाया जाएगा?
उत्तर – डेबिट पक्ष में।

प्रश्न 27 (मध्यम). अगर साझेदारी समझौते में पूंजी पर ब्याज का कोई प्रावधान नहीं है, तो क्या इसे विनियोजन खाते में दिखाएंगे?
उत्तर – नहीं, अगर समझौते में प्रावधान नहीं है, तो पूंजी पर ब्याज नहीं दिया जाएगा।

प्रश्न 28 (कठिन). फर्म को ₹60,000 का शुद्ध लाभ हुआ। साझेदारों A और B को क्रमशः ₹10,000 और ₹8,000 का वेतन देना है। पूंजी पर ब्याज A को ₹5,000 और B को ₹4,000 देना है। लाभ को बराबर बांटा जाता है। विनियोजन खाते में लाभ के रूप में कितना बांटा जाएगा?
उत्तर – ₹60,000 - ₹10,000 - ₹8,000 - ₹5,000 - ₹4,000 = ₹33,000. यह ₹33,000 A और B में ₹16,500 प्रत्येक को बांटा जाएगा।

» पूँजी पर ब्याज का परिकलन

प्रश्न 29 (आसान). राजेश ने 1 अप्रैल को 1,00,000 रुपये की पूँजी लगाई। पूँजी पर ब्याज की दर 10% वार्षिक है। 31 मार्च को राजेश की पूँजी पर ब्याज की गणना करें।
उत्तर – 1,00,000 * 10/100 = 10,000 रुपये।

प्रश्न 30 (आसान). प्रिया ने 1 अप्रैल को 50,000 रुपये की पूँजी लगाई। 1 अक्टूबर को उसने 20,000 रुपये अतिरिक्त पूँजी लगाई। ब्याज की दर 6% वार्षिक है। पूँजी पर ब्याज की गणना करें।
उत्तर – प्रारंभिक पूँजी पर ब्याज: 50,000 * 6/100 * 6/12 = 1,500 रुपये। अतिरिक्त पूँजी पर ब्याज: 20,000 * 6/100 * 6/12 = 600 रुपये। कुल ब्याज: 1,500 + 600 = 2,100 रुपये।

प्रश्न 31 (मध्यम). अर्जुन ने 1 अप्रैल को 2,00,000 रुपये की पूँजी के साथ व्यवसाय शुरू किया। 1 जुलाई को उसने 40,000 रुपये अतिरिक्त पूँजी लगाई। 1 दिसंबर को उसने 30,000 रुपये का आहरण किया। पूँजी पर ब्याज की दर 9% वार्षिक है। 31 मार्च को पूँजी पर ब्याज की गणना करें।
उत्तर – प्रारंभिक पूँजी पर (3 महीने): 2,00,000 * 9/100 * 3/12 = 4,500 रुपये।
अतिरिक्त पूँजी के बाद (5 महीने): (2,00,000 + 40,000) * 9/100 * 5/12 = 2,40,000 * 9/100 * 5/12 = 9,000 रुपये।
आहरण के बाद (4 महीने): (2,40,000 - 30,000) * 9/100 * 4/12 = 2,10,000 * 9/100 * 4/12 = 6,300 रुपये।
कुल ब्याज = 4,500 + 9,000 + 6,300 = 19,800 रुपये।

प्रश्न 32 (कठिन). कविता और राधा एक फर्म में 2:1 के अनुपात में लाभ बांटती हैं। 1 अप्रैल, 2022 को उनकी पूँजी क्रमशः 3,00,000 रुपये और 2,00,000 रुपये थी। 1 जुलाई को कविता ने 50,000 रुपये अतिरिक्त पूँजी लगाई और राधा ने 30,000 रुपये अतिरिक्त पूँजी लगाई। 1 अक्टूबर को कविता ने 40,000 रुपये और राधा ने 20,000 रुपये का आहरण किया। पूँजी पर ब्याज की दर 10% वार्षिक है। यदि वर्ष का लाभ 35,000 रुपये है, तो पूँजी पर ब्याज की गणना करें।

उत्तर – पहले सामान्य तरीके से ब्याज की गणना:

कविता:

1 अप्रैल-30 जून (3 महीने): 3,00,000 * 10/100 * 3/12 = 7,500

1 जुलाई-30 सितंबर (3 महीने): (3,00,000+50,000) * 10/100 * 3/12 = 3,50,000 * 10/100 * 3/12 = 8,750

1 अक्टूबर-31 मार्च (6 महीने): (3,50,000-40,000) * 10/100 * 6/12 = 3,10,000 * 10/100 * 6/12 = 15,500

कविता का कुल ब्याज = 7,500 + 8,750 + 15,500 = 31,750 रुपये।

राधा:

1 अप्रैल-30 जून (3 महीने): 2,00,000 * 10/100 * 3/12 = 5,000

1 जुलाई-30 सितंबर (3 महीने): (2,00,000+30,000) * 10/100 * 3/12 = 2,30,000 * 10/100 * 3/12 = 5,750

1 अक्टूबर-31 मार्च (6 महीने): (2,30,000-20,000) * 10/100 * 6/12 = 2,10,000 * 10/100 * 6/12 = 10,500

राधा का कुल ब्याज = 5,000 + 5,750 + 10,500 = 21,250 रुपये।

कुल ब्याज देय = 31,750 + 21,250 = 53,000 रुपये।

उपलब्ध लाभ = 35,000 रुपये।

चूँकि उपलब्ध लाभ (35,000 रुपये) देय ब्याज (53,000 रुपये) से कम है, तो लाभ को ब्याज के अनुपात में बांटा जाएगा।

ब्याज का अनुपात: 31,750 : 21,250 = 127 : 85।

कविता को ब्याज = 35,000 * (127 / (127+85)) = 35,000 * (127 / 212) = 21,000 रुपये (लगभग)।

राधा को ब्याज = 35,000 * (85 / (127+85)) = 35,000 * (85 / 212) = 14,000 रुपये (लगभग)।

» आहरणों पर ब्याज का परिकलन

प्रश्न 33 (आसान). अगर कोई साझेदार हर महीने के मध्य में ₹2,000 निकालता है और ब्याज दर 8% है, तो 12 महीने के लिए औसत अवधि क्या होगी?

उत्तर – 6 महीने

प्रश्न 34 (आसान). अगर एक साझेदार ने साल भर में कुल ₹24,000 आहरित किए और औसत अवधि 5.5 महीने है, ब्याज दर 10% है, तो ब्याज कितना होगा?

उत्तर – ₹1,100

प्रश्न 35 (मध्यम). गीता एक फर्म में साझेदार है। वह प्रत्येक तिमाही के अंत में ₹10,000 आहरित करती है। ब्याज की दर 9% वार्षिक है। आहरणों पर कुल ब्याज की गणना करें।

उत्तर – ₹1,350 (कुल आहरण = ₹40,000; औसत अवधि = 4.5 महीने; ब्याज = 40000 * 9/100 * 4.5/12 = 1350)

प्रश्न 36 (कठिन). रोहित एक फर्म से 1 जुलाई को ₹10,000, 1 अक्टूबर को ₹15,000, और 1 फरवरी को ₹5,000 आहरित करता है। ब्याज दर 8% वार्षिक है। उत्पाद विधि का उपयोग करके आहरणों पर ब्याज की गणना करें। (खाते 31 मार्च को बंद होते हैं)

उत्तर – ₹1,200 (कुल उत्पाद = (10000*9) + (15000*6) + (5000*2) = 90000+90000+10000 = 190000; ब्याज = 190000 * 8/100 * 1/12 = ₹1,266.67, जिसे ₹1,267 कह सकते हैं)

» एक साझेदार को लाभ की गारंटी

प्रश्न 37 (आसान). तीन साझेदार हैं, A, B और C। C को 15,000 रुपये के न्यूनतम लाभ की गारंटी है। वर्ष का लाभ 60,000 रुपये है और अनुपात 2:2:1 है। C का लाभ हिस्सा निकालो।

उत्तर – C का हिस्सा (60,000 * 1/5) = 12,000 रुपये। कमी = 15,000 - 12,000 = 3,000 रुपये। यह कमी A और B 2:2 यानी 1:1 के अनुपात में बांटेंगे। तो A 1,500 और B 1,500 रुपये वहन करेंगे। C को 15,000 रुपये मिलेंगे।

प्रश्न 38 (आसान). अगर पिछले प्रश्न में, C को गारंटी सिर्फ A ने दी होती, तो A कितना वहन करता?

उत्तर – अगर गारंटी सिर्फ A ने दी होती, तो A पूरी कमी 3,000 रुपये वहन करता। C को 15,000 मिलते, B को 24,000 (60,000 * 2/5) और A को 21,000 (24,000 - 3,000) मिलते।

प्रश्न 39 (मध्यम). X, Y और Z एक फर्म में 3:2:1 के अनुपात में लाभ बांटते हैं। Z को 20,000 रुपये के न्यूनतम लाभ की गारंटी है। वर्ष का लाभ 90,000 रुपये है। लाभ का विभाजन दिखाएं।

उत्तर – Z का हिस्सा (90,000 * 1/6) = 15,000 रुपये। कमी = 20,000 - 15,000 = 5,000 रुपये। यह कमी X और Y 3:2 के अनुपात में वहन करेंगे। X वहन करेगा 5,000 * (3/5) = 3,000 रुपये। Y वहन करेगा 5,000 * (2/5) = 2,000 रुपये। X को मिलेंगे 90,000 * (3/6) - 3,000 = 45,000 - 3,000 = 42,000 रुपये। Y को मिलेंगे 90,000 * (2/6) - 2,000 = 30,000 - 2,000 = 28,000 रुपये। Z को मिलेंगे 15,000 + 3,000 + 2,000 = 20,000 रुपये।

प्रश्न 40 (कठिन). अरुण, वरुण और तरुण 5:3:2 के अनुपात में साझेदार हैं। तरुण को पूंजी पर ब्याज के अतिरिक्त 2,50,000 रुपये के लाभ की गारंटी दी गई है। अगर कमी आती है तो अरुण और वरुण इसे 2:3 के अनुपात में पूरा करेंगे। फर्म का लाभ 8,60,000 रुपये है और पूंजी पर ब्याज 40,000 रुपये (अरुण 15k, वरुण 15k, तरुण 10k) है। लाभ का विभाजन कैसे होगा?

उत्तर – पहले कुल लाभ में से पूंजी पर ब्याज घटाएंगे: 8,60,000 - 40,000 = 8,20,000 रुपये। अब इस 8,20,000 रुपये को 5:3:2 के अनुपात में बांटेंगे। अरुण का हिस्सा = 8,20,000 * (5/10) = 4,10,000 रुपये। वरुण का हिस्सा = 8,20,000 * (3/10) = 2,46,000 रुपये। तरुण का हिस्सा = 8,20,000 * (2/10) = 1,64,000 रुपये। तरुण को गारंटी है 2,50,000 रुपये की, लेकिन उसे मिले 1,64,000 रुपये। कमी = 2,50,000 - 1,64,000 = 86,000 रुपये। यह कमी अरुण और वरुण 2:3 के अनुपात में वहन करेंगे। अरुण वहन करेगा = 86,000 * (2/5) = 34,400 रुपये। वरुण वहन करेगा = 86,000 * (3/5) = 51,600 रुपये। अंतिम लाभ वितरण: अरुण को मिलेंगे (4,10,000 - 34,400) = 3,75,600 रुपये। वरुण को मिलेंगे (2,46,000 - 51,600) = 1,94,400 रुपये। तरुण को मिलेंगे (1,64,000 + 34,400 + 51,600) = 2,50,000 रुपये। इसके अतिरिक्त, तीनों को पूंजी पर ब्याज भी मिलेगा: अरुण (15k), वरुण (15k), तरुण (10k)।

» पूर्व समायोजन

प्रश्न 41 (आसान). अंजू, बबली और चंद्रा साझेदार हैं और लाभ 1:1:1 में बांटते हैं। पूँजी पर 10% ब्याज लगाना भूल गए। अंजू की पूँजी 1,00,000, बबली की 80,000, चंद्रा की 60,000 रुपये है। कुल पूँजी पर ब्याज की गणना करें।

उत्तर – अंजू = 10,000, बबली = 8,000, चंद्रा = 6,000। कुल ब्याज = 24,000 रुपये।

प्रश्न 42 (आसान). अगर पूँजी पर ब्याज लगाना भूल गए, तो साझेदारों के पूँजी खातों में क्या डेबिट या क्रेडिट होगा?

उत्तर – जिन साझेदारों को पूँजी पर ब्याज मिलना चाहिए था, उनके खाते क्रेडिट होंगे, और जिन साझेदारों को लाभ का ज़्यादा हिस्सा मिल गया था, उनके खाते डेबिट होंगे।

प्रश्न 43 (मध्यम). रवि और मोहन साझेदार हैं, लाभ 2:1 में बांटते हैं। मोहन को 5,000 रुपये वेतन देना था, जो भूल गए। आवश्यक समायोजन प्रविष्टि बनाइए।

उत्तर – रवि का पूँजी खाता Dr. 3,333.33 रुपये, मोहन का पूँजी खाता Cr. 1,666.67 रुपये। (मोहन को वेतन मिलना था, तो Cr. होगा। फर्म का लाभ 5,000 से कम होता, जो 2:1 में Ravi:Mohan में बंटता, इसलिए रवि को 3333.33 डेबिट और मोहन को 1666.67 क्रेडिट करना होगा क्योंकि उसे कम लाभ मिला था।) *यह एक सामान्य उत्तर नहीं है, लेकिन एक उचित समाधान है। इसका शुद्ध प्रभाव यह होगा कि मोहन को 5000 मिलेंगे और रवि और मोहन दोनों के खातों से 3333.33 और 1666.67 क्रमशः लाभ के हिस्से के रूप में डेबिट किए जाएंगे, क्योंकि लाभ 5000 कम होगा।* सही समायोजन: रवि का पूँजी खाता Dr. 3,333.33, मोहन का पूँजी खाता Cr. 1,666.67.

प्रश्न 44 (कठिन). X, Y और Z साझेदार हैं, लाभ 3:2:1 में बांटते हैं। पूँजी पर 8% ब्याज लगाना भूल गए। X की पूँजी 2,00,000, Y की 1,50,000, Z की 1,00,000 रुपये है। साथ ही, X ने 20,000 रुपये का आहरण कयिा था, जसि पर 10% ब्याज लेना भूल गए। आवश्यक समायोजन प्रविष्टि बनाइए।

उत्तर – सबसे पहले, पूँजी पर ब्याज की गणना करें: X=16,000, Y=12,000, Z=8,000। कुल 36,000 (Cr)। आहरण पर ब्याज: X=2,000 (Dr)। शुद्ध प्रभाव: X को 14,000 Cr, Y को 12,000 Cr, Z को 8,000 Cr। कुल 34,000 का लाभ जो ज़्यादा बँट गया होगा (क्योंकि 36,000 Cr - 2,000 Dr = 34,000 शुद्ध प्रभाव)। यह 34,000 लाभ के अनुपात (3:2:1) में डेबिट होगा। X को 17,000 Dr, Y को 11,333.33 Dr, Z को 5,666.67 Dr। अब शुद्ध प्रभाव: X = 14,000 Cr - 17,000 Dr = 3,000 Dr। Y = 12,000 Cr - 11,333.33 Dr = 666.67 Cr। Z = 8,000 Cr - 5,666.67 Dr = 2,333.33 Cr। समायोजन प्रविष्टि: X का पूँजी खाता Dr. 3,000, Y का पूँजी खाता Cr. 666.67, Z का पूँजी खाता Cr. 2,333.33।

हल किए हुए उदाहरण (step-by-step)

उदाहरण 1. रमेश और सुरेश ने मिलकर एक पुरानी किताब की दुकान खोली। रमेश ने 20,000 रुपये लगाए और सुरेश ने 30,000 रुपये। वे दुकान से होने वाले मुनाफे को आपस में बराबर बाँटने पर सहमत हुए। क्या यह एक साझेदारी है? इसकी विशेषताओं को पहचानें।

› पहला कदम: क्या इसमें दो या अधिक व्यक्ति हैं? हाँ, रमेश और सुरेश दो व्यक्ति हैं।

› दूसरा कदम: क्या उनके बीच कोई समझौता है? हाँ, वे मुनाफे को बराबर बाँटने पर सहमत हुए हैं। भले ही यह अभी मौखिक हो, फिर भी एक समझौता है।

› तीसरा कदम: क्या वे कोई व्यवसाय चला रहे हैं? हाँ, वे पुरानी किताब की दुकान चला रहे हैं जो एक व्यवसाय है।

› चौथा कदम: क्या लाभ-हानि का विभाजन हो रहा है? हाँ, वे मुनाफे को बराबर बाँटने पर सहमत हैं।

› पांचवां कदम: क्या इसमें पारस्परिक अभिकरण है? हाँ, दोनों ही दुकान के लिए काम करेंगे और एक-दूसरे के कामों के लिए जिम्मेदार होंगे।

› निष्कर्ष: हाँ, यह एक वैध साझेदारी है।

उत्तर – यह एक वैध साझेदारी है, क्योंकि इसमें साझेदारी की सभी आवश्यक विशेषताएँ मौजूद हैं।

उदाहरण 2. अगर एक साझेदारी विलेख में पूँजी पर ब्याज, लाभ-हानि विभाजन अनुपात, और साझेदार के वेतन का कोई उल्लेख नहीं है, तो भारतीय साझेदारी अधिनियम 1932 के अनुसार क्या प्रावधान लागू होंगे?

› पहला, पूँजी पर ब्याज: अगर विलेख में कुछ नहीं लिखा है, तो किसी भी साझेदार को उसकी पूँजी पर कोई ब्याज नहीं मिलेगा.

› दूसरा, लाभ-हानि विभाजन अनुपात: अगर विलेख में लाभ-हानि बांटने का अनुपात नहीं बताया गया है, तो सभी साझेदारों में लाभ और हानि बराबर-बराबर बांटी जाएगी, भले ही उन्होंने कितनी भी पूँजी लगाई हो.

› तीसरा, साझेदार का वेतन: अगर विलेख में साझेदार को वेतन या कमीशन देने का कोई प्रावधान नहीं है, तो किसी भी साझेदार को फर्म के काम के लिए कोई वेतन या कमीशन नहीं मिलेगा.

› चौथा, ऋण पर ब्याज (अगर साझेदार ने फर्म को ऋण दिया है): अगर किसी साझेदार ने फर्म को ऋण दिया है और विलेख में ब्याज का उल्लेख नहीं है, तो उसे 6% प्रतिवर्ष की दर से ब्याज मिलेगा.

उत्तर – विलेख के अभाव में पूँजी पर कोई ब्याज नहीं, लाभ-हानि बराबर-बराबर, वेतन/कमीशन नहीं, और साझेदार के ऋण पर 6% प्रतिवर्ष ब्याज मिलेगा.

उदाहरण 3. मोहन और सोहन एक साझेदारी फर्म में साझेदार हैं। उनके बीच कोई साझेदारी विलेख नहीं है। मोहन ने फर्म को ₹50,000 का ऋण दिया है और वह उस पर 10% प्रति वर्ष की दर से ब्याज चाहता है। सोहन कहता है कि मोहन को कोई वेतन मिलना चाहिए क्योंकि वह फर्म के लिए अधिक काम करता है। फर्म को ₹20,000 का लाभ हुआ है। बताइए इन स्थितियों में क्या नियम लागू होंगे?

› पहला, मोहन के ऋण पर ब्याज: चूँकि कोई विलेख नहीं है, भारतीय साझेदारी अधिनियम 1932 लागू होगा। अधिनियम के अनुसार, साझेदार के ऋण पर 6% प्रति वर्ष की दर से ब्याज देय होता है, न कि 10%।

› दूसरा, सोहन का वेतन का दावा: अधिनियम के अनुसार, यदि विलेख में प्रावधान नहीं है, तो किसी भी साझेदार को कोई वेतन या पारिश्रमिक नहीं मिलता। इसलिए, सोहन को वेतन नहीं मिलेगा।

› तीसरा, लाभ का विभाजन: विलेख की अनुपस्थिति में, लाभ-हानि को साझेदारों के बीच बराबर-बराबर बांटा जाता है। तो ₹20,000 का लाभ मोहन और सोहन में ₹10,000-₹10,000 में बंटेगा।

उत्तर – मोहन को अपने ऋण पर 6% प्रति वर्ष के हिसाब से ब्याज मिलेगा। सोहन को कोई वेतन नहीं मिलेगा। फर्म का ₹20,000 का लाभ दोनों साझेदारों में ₹10,000-₹10,000 में बराबर बांटा जाएगा।

उदाहरण 4. मान लीजिए, अमन और बंटी एक फर्म में साझेदार हैं। अमन की पूँजी ₹2,00,000 और बंटी की पूँजी ₹1,50,000 है। साल के दौरान अमन को ₹10,000 वेतन मिला और बंटी को ₹5,000 कमीशन। पूँजी पर ब्याज ₹12,000 और ₹9,000 है। अमन ने ₹20,000 और बंटी ने ₹15,000 आहरण किए। फर्म का लाभ ₹60,000 है जिसे वे बराबर बांटते हैं। स्थायी पूँजी विधि से उनके पूँजी और चालू खाते कैसे बनेंगे?

› पहले पूँजी खाते बनाएंगे। चूंकि कोई अतिरिक्त पूँजी नहीं लाई गई और न ही कोई स्थायी आहरण किया गया, इसलिए अमन का पूँजी खाता ₹2,00,000 और बंटी का पूँजी खाता ₹1,50,000 पर स्थिर रहेगा।

› अब चालू खाते बनाएंगे। चालू खाते की क्रेडिट (जमा) तरफ हम प्रारंभिक शेष (अगर कोई है), वेतन, कमीशन, पूँजी पर ब्याज और लाभ का हिस्सा लिखेंगे।

› चालू खाते की डेबिट (नाम) तरफ हम आहरण और आहरण पर ब्याज (अगर होता) लिखेंगे।

› अमन के चालू खाते में: क्रेडिट तरफ: वेतन ₹10,000, पूँजी पर ब्याज ₹12,000, लाभ का हिस्सा (₹60,000 का आधा) ₹30,000. डेबिट तरफ: आहरण ₹20,000.

› बंटी के चालू खाते में: क्रेडिट तरफ: कमीशन ₹5,000, पूँजी पर ब्याज ₹9,000, लाभ का हिस्सा (₹60,000 का आधा) ₹30,000. डेबिट तरफ: आहरण ₹15,000.

› दोनों चालू खातों का शेष निकालेंगे।

› अमन का चालू खाता शेष = (10,000 + 12,000 + 30,000) - 20,000 = ₹32,000 (जमा शेष)

› बंटी का चालू खाता शेष = (5,000 + 9,000 + 30,000) - 15,000 = ₹29,000 (जमा शेष)

उत्तर – अमन का पूँजी खाता: ₹2,00,000 (स्थिर), अमन का चालू खाता शेष: ₹32,000 (जमा)। बंटी का पूँजी खाता: ₹1,50,000 (स्थिर), बंटी का चालू खाता शेष: ₹29,000 (जमा)।

उदाहरण 5. साझेदार 'अमन' की प्रारंभिक पूँजी 1,00,000 रुपये थी। उसे 10,000 रुपये वेतन मिला और पूँजी पर 5,000 रुपये ब्याज मिला। उसने 2,000 रुपये का आहरण किया। अस्थिर पूँजी विधि से उसका पूँजी खाता बनाओ।

› सबसे पहले, क्रेडिट साइड में 'शेष आ/ला' (प्रारंभिक पूँजी) लिखेंगे: 1,00,000 रुपये।

› अब, अमन को वेतन मिला है तो 'वेतन' क्रेडिट साइड में लिखेंगे: 10,000 रुपये।

› पूँजी पर ब्याज मिला है तो 'पूँजी पर ब्याज' भी क्रेडिट साइड में लिखेंगे: 5,000 रुपये।

› अमन ने आहरण किया है, तो 'आहरण' डेबिट साइड में लिखेंगे: 2,000 रुपये।

› अब दोनों साइड का टोटल करेंगे। क्रेडिट साइड का टोटल (1,00,000 + 10,000 + 5,000) = 1,15,000 रुपये।

› डेबिट साइड का टोटल (2,000 रुपये)।

› अंतिम शेष निकालने के लिए क्रेडिट टोटल में से डेबिट टोटल घटाएंगे: 1,15,000 - 2,000 = 1,13,000 रुपये। इसे 'शेष आ/ले' (अंतिम शेष) के रूप में डेबिट साइड में लिखेंगे।

उत्तर – अमन का अंतिम पूँजी शेष 1,13,000 रुपये होगा।

उदाहरण 6. मान लीजिए दो साझेदार, राम और श्याम, हैं। राम की पूँजी 5,00,000 रुपये है और श्याम की 3,00,000 रुपये। उन्हें पूँजी पर 10% ब्याज मिलता है। राम का वेतन 10,000 रुपये और आहरण 5,000 रुपये है। श्याम का कमीशन 8,000 रुपये और आहरण 3,000 रुपये है। अगर स्थिर पूँजी विधि अपनाई जाती है, तो ये लेन-देन कहाँ दर्ज होंगे?

› पहला कदम है खातों की पहचान करना: स्थिर पूँजी विधि में दो खाते बनेंगे - साझेदारों का पूँजी खाता (Partners' Capital Account) और साझेदारों का चालू खाता (Partners' Current Account).

› दूसरा कदम, पूँजी खाते में क्या आएगा: साझेदारों की मूल पूँजी (राम: 5,00,000, श्याम: 3,00,000) सिर्फ़ पूँजी खाते में दर्ज होगी। अगर कोई नई पूँजी लाई गई है या पूँजी निकाली गई है तो वो भी यहीं आएगी। बाकी कुछ नहीं आएगा.

› तीसरा कदम, चालू खाते में क्या आएगा: सभी समायोजन, जैसे पूँजी पर ब्याज (राम: 50,000, श्याम: 30,000), राम का वेतन (10,000), श्याम का कमीशन (8,000), राम का आहरण (5,000) और श्याम का आहरण (3,000), ये सब चालू खाते में दर्ज होंगे.

› चौथा कदम, लाभ या हानि का बंटवारा: अगर कोई लाभ या हानि होती है, तो उसका बंटवारा भी चालू खाते में ही दर्ज होगा.

उत्तर – स्थिर पूँजी विधि में, पूँजी खातों में सिर्फ़ मूल पूँजी ही रहेगी (जब तक कि अतिरिक्त पूँजी न लाई जाए या स्थायी रूप से पूँजी न निकाली जाए)। बाकी सभी समायोजन जैसे पूँजी पर ब्याज, वेतन, कमीशन, आहरण और लाभ-हानि का बंटवारा साझेदारों के चालू खातों में दर्ज होंगे। इस तरह पूँजी खाते का शेष 'स्थिर' रहेगा।

उदाहरण 7. अमित और बाबू एक फर्म में साझेदार हैं। 31 मार्च 2023 को समाप्त वर्ष के लिए फर्म का शुद्ध लाभ ₹50,000 था। साझेदारी समझौते के अनुसार, अमित को प्रतिवर्ष ₹5,000 वेतन, और बाबू को पूंजी पर 5% ब्याज मिलेगा (बाबू की पूंजी ₹1,00,000 है)। आहरण पर ब्याज अमित से ₹500 और बाबू से ₹300 लिया जाएगा। शेष लाभ को वे 3:2 के अनुपात में बांटेंगे। लाभ एवं हानि विनियोजन खाता बनाइए।

› सबसे पहले, लाभ एवं हानि खाते से शुद्ध लाभ को विनियोजन खाते में क्रेडिट साइड में लाएंगे: 'By Profit & Loss A/c (Net Profit) - ₹50,000'.

› फिर, आहरण पर ब्याज क्रेडिट साइड में दिखाएंगे (फर्म के लिए आय): 'By Interest on Drawings: Amit ₹500, Babu ₹300 = Total ₹800'.

› अब, डेबिट साइड में वेतन दिखाएंगे: 'To Amit's Salary A/c - ₹5,000'.

› इसके बाद, डेबिट साइड में पूंजी पर ब्याज दिखाएंगे: 'To Interest on Capital A/c: Babu (₹1,00,000 का 5%) = ₹5,000'.

› अब, क्रेडिट साइड का कुल योग (₹50,000 + ₹800 = ₹50,800) में से डेबिट साइड के कुल योग (₹5,000 + ₹5,000 = ₹10,000) को घटाएंगे।

› बचा हुआ लाभ (₹50,800 - ₹10,000 = ₹40,800) है। इसे अमित और बाबू के बीच 3:2 के अनुपात में बांटेंगे।

› अमित का हिस्सा: ₹40,800 * (3/5) = ₹24,480.

› बाबू का हिस्सा: ₹40,800 * (2/5) = ₹16,320.

› इसे डेबिट साइड में दिखाएंगे: 'To Partners' Capital A/cs (Profit transferred): Amit ₹24,480, Babu ₹16,320 = Total ₹40,800'.

उत्तर – विनियोजन खाते का डेबिट और क्रेडिट दोनों का योग ₹50,800 आएगा, और लाभ ₹40,800 को 3:2 के अनुपात में साझेदारों के पूंजी खातों में हस्तांतरित कर दिया जाएगा।

उदाहरण 8. सलोनी और सृष्टि एक फर्म में साझेदार हैं। 1 अप्रैल, 2015 को उनकी पूँजी क्रमशः 2,00,000 रुपये और 3,00,000 रुपये थी। 1 जुलाई, 2015 को सलोनी ने 50,000 रुपये अतिरिक्त पूँजी लगाई और सृष्टि ने 60,000 रुपये अतिरिक्त पूँजी लगाई। अपने निजी उपयोग हेतु सलोनी ने 1 अक्टूबर, 2015 को 30,000 रुपये तथा सृष्टि ने 1 जनवरी, 2016 को 15,000 रुपये का आहरण किया। पूँजी पर 8% प्रतिवर्ष की दर से ब्याज अनुमत था। वित्त वर्ष 2015-16 के दौरान दोनों साझेदारों की पूँजी पर ब्याज की गणना कीजिए। (लेखा वर्ष: 1 अप्रैल से 31 मार्च)

› सबसे पहले सलोनी के लिए गणना करते हैं:

› 1. प्रारंभिक पूँजी (2,00,000 रुपये) पर 1 अप्रैल से 30 जून तक (3 महीने) ब्याज: 2,00,000 * 8/100 * 3/12 = 4,000 रुपये।

› 2. 1 जुलाई को 50,000 रुपये अतिरिक्त पूँजी लगाने के बाद, कुल पूँजी हो गई 2,00,000 + 50,000 = 2,50,000 रुपये। इस पर 1 जुलाई से 30 सितंबर तक (3 महीने) ब्याज: 2,50,000 * 8/100 * 3/12 = 5,000 रुपये।

› 3. 1 अक्टूबर को 30,000 रुपये आहरण करने के बाद, पूँजी हो गई 2,50,000 - 30,000 = 2,20,000 रुपये। इस पर 1 अक्टूबर से 31 मार्च तक (6 महीने) ब्याज: 2,20,000 * 8/100 * 6/12 = 8,800 रुपये।

› सलोनी का कुल ब्याज: 4,000 + 5,000 + 8,800 = 17,800 रुपये।

› अब सृष्टि के लिए गणना करते हैं:

› 1. प्रारंभिक पूँजी (3,00,000 रुपये) पर 1 अप्रैल से 30 जून तक (3 महीने) ब्याज: 3,00,000 * 8/100 * 3/12 = 6,000 रुपये।

› 2. 1 जुलाई को 60,000 रुपये अतिरिक्त पूँजी लगाने के बाद, कुल पूँजी हो गई 3,00,000 + 60,000 = 3,60,000 रुपये। इस पर 1 जुलाई से 31 दिसंबर तक (6 महीने) ब्याज: 3,60,000 * 8/100 * 6/12 = 14,400 रुपये।

› 3. 1 जनवरी को 15,000 रुपये आहरण करने के बाद, पूँजी हो गई 3,60,000 - 15,000 = 3,45,000 रुपये। इस पर 1 जनवरी से 31 मार्च तक (3 महीने) ब्याज: 3,45,000 * 8/100 * 3/12 = 6,900 रुपये।

› सृष्टि का कुल ब्याज: 6,000 + 14,400 + 6,900 = 27,300 रुपये।

उत्तर – सलोनी की पूँजी पर ब्याज = 17,800 रुपये। सृष्टि की पूँजी पर ब्याज = 27,300 रुपये।

उदाहरण 9. एक साझेदार, 'रवि', प्रत्येक महीने की शुरुआत में ₹5,000 आहरित करता है। ब्याज की दर 10% वार्षिक है। वर्ष के अंत में आहरणों पर ब्याज की गणना करें। (लेखा वर्ष 31 मार्च को समाप्त होता है)

› पहला चरण: कुल आहरण की राशि निकालें। रवि हर महीने ₹5,000 निकालता है, तो 12 महीनों में कुल आहरण = ₹5,000 * 12 = ₹60,000।

› दूसरा चरण: औसत अवधि (Average Period) निकालें। क्योंकि आहरण प्रत्येक महीने की शुरुआत में किया जाता है, तो औसत अवधि का सूत्र है (पहला आहरण से माह + अंतिम आहरण से माह) / 2।

› - पहला आहरण 1 अप्रैल को हुआ, तो 31 मार्च तक 12 महीने।

› - अंतिम आहरण अगले साल 1 मार्च को हुआ, तो 31 मार्च तक 1 महीना।

› - औसत अवधि = (12 + 1) / 2 = 13 / 2 = 6.5 महीने।

› तीसरा चरण: आहरणों पर ब्याज की गणना करें। ब्याज = कुल आहरण * दर * (औसत अवधि / 12)।

› - ब्याज = ₹60,000 * (10/100) * (6.5/12)।

› - ब्याज = ₹6,000 * (6.5/12) = ₹3,250।

› तो, रवि को आहरणों पर ₹3,250 का ब्याज देना होगा।

उत्तर – ₹3,250

उदाहरण 10. मोहित और रोहन एक फर्म में 2:1 के अनुपात में लाभ-हानि बांटते हैं। उन्होंने राहुल को 1/4 लाभ के हिस्सेदार के रूप में शामिल किया और उसे कम से कम 50,000 रुपये लाभ की गारंटी दी। वर्ष के अंत में फर्म को 1,60,000 रुपये का लाभ हुआ। लाभ का विभाजन कैसे होगा?

› सबसे पहले, नया लाभ विभाजन अनुपात निकालेंगे। राहुल का हिस्सा 1/4 है, तो बचा हुआ हिस्सा 1 - 1/4 = 3/4। यह 3/4 हिस्सा मोहित और रोहन 2:1 के अनुपात में बांटेंगे। मोहित का नया हिस्सा = (3/4) * (2/3) = 2/4। रोहन का नया हिस्सा = (3/4) * (1/3) = 1/4। तो, नया अनुपात मोहित:रोहन:राहुल = 2:1:1 होगा।

› अब, 1,60,000 रुपये के लाभ को इस नए अनुपात में बांटेंगे।

› मोहित का हिस्सा = 1,60,000 * (2/4) = 80,000 रुपये।

› रोहन का हिस्सा = 1,60,000 * (1/4) = 40,000 रुपये।

› राहुल का हिस्सा = 1,60,000 * (1/4) = 40,000 रुपये।

› राहुल को 50,000 रुपये की गारंटी दी गई थी, लेकिन उसे मिले सिर्फ 40,000 रुपये। तो, कमी हुई = 50,000 - 40,000 = 10,000 रुपये।

› यह 10,000 रुपये की कमी मोहित और रोहन अपने पुराने लाभ विभाजन अनुपात (2:1) में वहन करेंगे।

› मोहित द्वारा वहन की गई कमी = 10,000 * (2/3) = 6,667 रुपये (लगभग)।

› रोहन द्वारा वहन की गई कमी = 10,000 * (1/3) = 3,333 रुपये (लगभग)।

› अब, अंतिम लाभ वितरण:

› मोहित को मिलेंगे = 80,000 - 6,667 = 73,333 रुपये।

› रोहन को मिलेंगे = 40,000 - 3,333 = 36,667 रुपये।

› राहुल को मिलेंगे = 40,000 + 6,667 + 3,333 = 50,000 रुपये।

› कुल योग चेक करें: 73,333 + 36,667 + 50,000 = 1,60,000 रुपये।

› इस तरह से लाभ-हानि विनियोग खाता (Profit and Loss Appropriation Account) बनेगा।

उत्तर – मोहित: 73,333 रुपये, रोहन: 36,667 रुपये, राहुल: 50,000 रुपये।

उदाहरण 11. रमीज और ज़हीर 1:1 के अनुपात में साझेदार हैं। 1 अप्रैल 2015 को उनकी पूँजी क्रमशः 50,000 रुपये और 1,00,000 रुपये थी। 31 मार्च 2016 को जब अंतिम खाते बन गए, तो पता चला कि साझेदारी विलेख के अनुसार 6% प्रति वर्ष की दर से पूँजी पर ब्याज लगाना भूल गए थे। आवश्यक समायोजन प्रविष्टि (adjustment entry) बनाइए।

› पहला कदम: हमें यह देखना होगा कि अगर पूँजी पर ब्याज दिया होता तो कितना होता।

› रमीज का ब्याज = 50,000 का 6% = 3,000 रुपये।

› ज़हीर का ब्याज = 1,00,000 का 6% = 6,000 रुपये।

› कुल ब्याज = 3,000 + 6,000 = 9,000 रुपये।

› दूसरा कदम: यह 9,000 रुपये फर्म के लिए खर्चा था, जो उन्होंने नहीं किया। तो इतना लाभ साझेदारों में ज़्यादा बंट गया होगा।

› यह 9,000 रुपये का लाभ रमीज और ज़हीर में 1:1 के अनुपात में बंट गया होगा, यानी 4,500 रुपये रमीज को और 4,500 रुपये ज़हीर को।

› तीसरा कदम: अब हम देखेंगे कि हर साझेदार पर क्या असर पड़ा।

› रमीज को मिलना चाहिए था (पूँजी पर ब्याज) = 3,000 रुपये (जमा)

› रमीज को मिला (लाभ का हिस्सा) = 4,500 रुपये (जमा)

› मतलब रमीज को 1,500 रुपये (4,500 - 3,000) ज्यादा मिल गए हैं, तो उसके खाते को 1,500 रुपये से नाम (Debit) करेंगे।

› ज़हीर को मिलना चाहिए था (पूँजी पर ब्याज) = 6,000 रुपये (जमा)

› ज़हीर को मिला (लाभ का हिस्सा) = 4,500 रुपये (जमा)

› मतलब ज़हीर को 1,500 रुपये (6,000 - 4,500) कम मिले हैं, तो उसके खाते को 1,500 रुपये से जमा (Credit) करेंगे।

› चौथा कदम: समायोजन प्रविष्टि (Adjustment Entry) बनाना।

› रमीज का पूँजी खाता Dr. 1,500

› ज़हीर के पूँजी खाते से 1,500

› (पूँजी पर ब्याज के समायोजन हेतु)

उत्तर – समायोजन प्रविष्टि होगी: रमीज का पूँजी खाता डेबिट 1,500 रुपये, और ज़हीर का पूँजी खाता क्रेडिट 1,500 रुपये।

बोर्ड परीक्षा के लिए ख़ास

• यह विषय बोर्ड परीक्षा के लिए बहुत महत्वपूर्ण है. अक्सर सीधे प्रश्न पूछे जाते हैं कि साझेदारी विलेख के अभाव में कौन से नियम लागू होते हैं, या इसकी विषय-वस्तु क्या है.

• यह टॉपिक बोर्ड परीक्षा में केस स्टडी या छोटे प्रश्न के रूप में बहुत बार पूछा जाता है। सारे प्रावधानों को बिंदुवार याद रखें।

• स्थिर पूँजी विधि के प्रारूप (फॉर्मेट) को ध्यान से याद कर लेना, खासकर कि कौन सी चीज़ पूँजी खाते में जाएगी और कौन सी चालू खाते में। बोर्ड परीक्षा में इसके फॉर्मेट और एक छोटा सवाल ज़रूर आता है।

• अस्थिर पूँजी विधि से पूँजी खाता बनाने का प्रारूप और उसमें क्या-क्या डेबिट या क्रेडिट होता है, यह बोर्ड परीक्षा के लिए बहुत महत्वपूर्ण है। अक्सर इस पर आधारित प्रश्न आते हैं।

• यह टॉपिक बोर्ड परीक्षा के लिए बहुत महत्वपूर्ण है। अक्सर इस पर सीधा अंतर या किसी समायोजन को किस खाते में दर्ज करना है, यह पूछा जाता है।

• यह विषय बोर्ड परीक्षा के लिए बहुत महत्वपूर्ण है! पूँजी पर ब्याज की गणना वाले सवाल अक्सर आते हैं, खासकर जब अतिरिक्त पूँजी और आहरण दोनों दिए हों। यह एक 'लंबे' प्रश्न का हिस्सा हो सकता है, जहाँ आपको लाभ-हानि नियोजन खाता बनाना होगा।

• यह विषय बोर्ड परीक्षा में अक्सर पूछा जाता है! खासकर अनियमित आहरणों पर गुणनफल विधि या मासिक/तिमाही आहरणों पर औसत अवधि विधि के प्रश्न 3-4 अंक में आते हैं। सूत्रों को अच्छे से याद करना और गणना में गलती मत करना।

• लाभ की गारंटी वाले प्रश्न बोर्ड परीक्षा में अक्सर आते हैं। गणना ध्यान से करें, खासकर जब कमी को बांटने का अनुपात दिया हो, और यह भी देखें कि गारंटी किस-किस साझेदार ने दी है - अकेले एक ने या सबने मिलकर।

• यह अवधारणा बोर्ड परीक्षाओं के लिए बहुत महत्वपूर्ण है। 'टेबल शोइंग एडजस्टमेंट' बनाकर सीधा साझेदारों के पूँजी खातों में समायोजन प्रविष्टि करना सीख लो, क्योंकि इस पर आधारित प्रश्न अक्सर आते हैं।

एक नज़र में रिवीज़न

› साझेदारी विलेख: साझेदारों के बीच लिखित समझौता, शर्तों का स्पष्टीकरण.

› विलेख की अनुपस्थिति: लाभ-हानि बराबर, पूँजी/आहरण पर ब्याज नहीं, ऋण पर 6% ब्याज, वेतन नहीं।

› स्थिर पूँजी विधि: पूँजी खाता स्थिर, चालू खाते में सभी समायोजन।

› अस्थिर पूँजी: एक खाता, सभी समायोजन सीधे पूँजी में, शेष अस्थिर।

› स्थिर पूँजी में 2 खाते (पूँजी, चालू); अस्थिर में 1 खाता; समायोजन चालू/पूँजी खाते में।

› पूँजी पर ब्याज: प्रारंभिक + अतिरिक्त (समय के अनुसार) - आहरण (समय के अनुसार); लाभ कम तो अनुपात में बांटो।

› आहरण पर ब्याज: स्थिर आहरण-औसत अवधि; अनियमित आहरण-गुणनफल विधि।

› साझेदार को न्यूनतम लाभ की गारंटी; कमी अन्य साझेदार वहन करते हैं।

› अंतिम खाते बनने के बाद की लेखांकन त्रुटियों को 'पूर्व समायोजन' से सुधारना।